

The Public

(Problems and Solutions)

An International Refereed and Peer-Reviewed Research Journal
Vol. 7, No. II April-June 2018

EDITOR IN CHIEF

Dr. Mukesh Kumar Malviya

EDITOR

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

Dr. Resell look, Austria

EDITORIAL BOARD

Dr. Priyanka Chakrawarty

Department of Political Science, Rani Durgavati Viswavidyalaya, Jabalpur (M.P.)

Dr. Gitanjali Singh

Department of French Studies, Banaras Hindu University Varanasi (U.P.)

Dr. Sachin Awasthi

Department of Economics, Government College, Aron, Dist-Guna (M.P.)

Shri Sunil Kumar

Research Scholar, Law School, Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Dr. Bharati Bala Patnaik

Head, Dept. of Journalism & Mass Communication, S.M.I.T., Brahmapur, Ganjam, Odisha

Dr. Vijay Kumar Saroj

Asst. Professor, Law School, Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Dr. Ritu Varshney Gupta

Asst. Professor, (Hindi) Kirorimal College, DU, Delhi

खेतड़ी नगर भौगोलिक परिचय

कमल सिंह मीणा

शोधार्थी,

भूगोल विभाग,

राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरु (राजस्थान)

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

डॉ. हेमन्त मंगल

सह—आचार्य,

भूगोल विभाग,

राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरु (राजस्थान)

खेतड़ी नगर $27^{\circ}58'$ उत्तरी एवं $75^{\circ}47'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह राजधानी जयपुर से लगभग 180 किलोमीटर दूरी पर है एवं जिला मुख्यालय झुन्झुनूं से 68 किलोमीटर है। यह सीकर, जयपुर, कोटपूतली, दिल्ली से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। राज्यमार्ग संख्या 13 शाहपुरा—अजीतगढ़—खेतड़ी—हिसार यहाँ से होकर गुजरता है। यहाँ से 10 किलोमीटर उत्तरी हिस्से में स्थित सिंधाना एक प्रमुख केन्द्र है जहाँ पर चारों दिशाओं से सड़के आकर मिलती है, जो क्रमशः उत्तर—पश्चिम में चिड़ावा, उत्तर में बुहाना, पूर्व में नारनौल एवं दक्षिण में शाहपुरा—जयपुर को जाती है। इस प्रकार यह शहर, सड़क मार्ग द्वारा अपने चारों तरफ स्थित सभी मुख्य स्थलों से जुड़ा हुआ है। इस शहर का सभीपस्थ रेलवे स्टेशन चिड़ावा है जो 38 किलोमीटर उत्तर—पश्चिम में स्थित है। यह शहर अरावली की पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है। माध्यमिक समुद्रतल से इसकी ऊँचाई 425 से 485 मीटर है। दक्षिण में खेतड़ी शहर से लेकर उत्तर में तांबा परियोजना कॉलोनी तक के सम्पूर्ण 10 किलोमीटर तक के क्षेत्र के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में ऊँची पहाड़ियाँ हैं। पहाड़ियों की ऊँचाई पश्चिम तक के सम्पूर्ण 10 किलोमीटर तक के क्षेत्र के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में ऊँची पहाड़ियाँ हैं। सुख नदी यहाँ की मुख्य नदी में 500 से 800 मीटर है तथा पूर्वी पहाड़ियों की ऊँचाई 500 मीटर से 600 मीटर तक है। सुख नदी यहाँ की मुख्य नदी है जो दक्षिण से उत्तर—पूर्व की ओर बहती है। दोनों तरफ की पहाड़ियों से निकलते छोटे—छोटे नाले इस नदी में मिलते हैं। पश्चिमी पहाड़ियाँ अधिक ऊँची हैं तथा इनका ढलान भी अधिक है। इन्हीं पहाड़ियों में तांबे का खनिज भंडार भी पाया जाता है।

जलवायु — मरुस्थलीय स्थिति के अनुरूप यहाँ पर शुष्क एवं मरुस्थलीय जलवायु पायी जाती है जिसमें कम वर्षा एवं अधिक तापमान का प्रभाव रहता है। यहाँ की औसत वर्षा 560 मिलीमीटर है। परन्तु वर्षा की अनिश्चितता बनी रहती है। करीब 90 प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर महीनों में हो जाती है। मरुस्थलीय स्थिति के अनुरूप ही यहाँ पर तापमान में भिन्नता पायी जाती है। मई और जून के महीने में तापमान 40° सेन्टीग्रेड से 45° सेन्टीग्रेट के बीच रहता है एवं रात के समय भी तापमान $23-27^{\circ}$ सेन्टीग्रेट के बीच रहता है। जनवरी सबसे ठण्डा महीना है। उस समय दिन का औसत अधिकतम तापमान $22^{\circ}5$ सेन्टीग्रेट तथा न्यूनतम 4.2° सेन्टीग्रेट रहता है। रात में तापमान कभी—कभी शून्य से भी नीचे चला जाता है। आद्रता 25-35 प्रतिशत के मध्य पायी जाती है, केवल बरसात के मौसम में ही आद्रता 56 से 56 प्रतिशत चला जाता है। मई—जून में यहाँ पर तेज धूल की अधियाँ चलती हैं। जिनका वेग 12 से 18 किलोमीटर प्रति घंटा रहता है। मई—जून में यहाँ पर तेज धूल की अधियाँ चलती हैं। जिनका वेग 12 से 18 किलोमीटर प्रति घंटा रहता है। गर्मी के दिनों में पश्चिम एवं दक्षिण—पश्चिम से जाड़े के मौसम में मुख्यतः उत्तर—पश्चिम एवं उत्तर से हवाएँ चलती हैं। गर्मी के दिनों में पश्चिम एवं दक्षिण—पश्चिम से हवाएँ चलती हैं।

तापमान — खेतड़ी क्षेत्र के तापमान में अत्यन्त विषमता पाई जाती है। अप्रैल व जून महिने में तापमान अधिक रहता है। जून महिने में तो तापमान कभी—कभी 450 सेण्टीग्रेट तक पहुंच जाता है लेकिन मई व जून महिने में औसत तापमान लगभग 410 सेण्टीग्रेट के आस—पास रहता है। इसी प्रकार न्यूनतम तापमान दिसम्बर व जनवरी में अंकित किया जाता है। मगर शीतऋतु नवम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी तक रही है। दिसम्बर व जनवरी में तापमान होने करण शहर जाता है। मगर शीतऋतु नवम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी तक रही है। दिसम्बर व जनवरी से दिसम्बर तक खेतड़ी क्षेत्र की जलवायु शुष्क रहती है। कार्यालय मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर के अनुसार जनवरी से दिसम्बर तक खेतड़ी क्षेत्र का मासिक वर्षों में निम्नतम व अधिकतम तापमान निम्न प्रकार से है—

खेतड़ी में वर्ष 2016-17 का औसत मासिक तापमान

वर्ष	अधिकतम तापमान (डिग्री सेण्टीग्रेट में)	न्यूनतम तापमान (डिग्री सेण्टीग्रेट में)	औसत तापमान (डिग्री सेण्टीग्रेट में)
1.	जनवरी	18.8	6.7
2.	फरवरी	26.5	11.2
3.	मार्च	28.4	15.1
4.	अप्रैल	35	21
5.	मई	41.1	25.1
6.	जून	38.6	27
7.	जुलाई	34.4	26.5
8.	अगस्त	34.2	26.2
9.	सितम्बर	36.0	26.3
10.	अक्टूबर	35.2	19.8
11.	नवम्बर	28.9	14
12.	दिसम्बर	24.2	7.6

उपरोक्त तालिका के अनुसार वर्ष 2016 के तापमान के आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक तापमान माह मई में 41.1 रहा जबकि न्यूनतम तापमान माह जनवरी 6.7 में रहा है। इसी प्रकार 2017 का औसत तापमान 24.49 डिग्री सेण्टीग्रेट रहा है।

मृदा एवं वनस्पति – मृदा भूमि की ऊपरी सतह होती है जो चट्ठानों के टूटने फूटने व विघटन से उत्पन्न सामग्री तथा उस पर पड़े जलवायु वनस्पति एवं अन्य जैविक कारकों के प्रभाव से विकसित होती है यह एक अनवरत प्रक्रिया का प्रतिफल है जो भू-गर्भिक युगों में होती रहती है मृदा की प्रकृति उस मूल सेल की संरचना पर निर्भर करती है जिसके विखंडन से उसकी उत्पत्ति हुई है लेकिन इस लंबी प्रक्रिया में अनेक भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन होते हैं साथ ही उसमें जीवाशम व वनस्पति अंश सम्मिलित होकर उसे एक निश्चित स्वरूप प्रदान कर देते हैं प्राय मृदा की सतह 30 से 40 सेंटीमीटर मानी जाती है किंतु यह 150 सेंटीमीटर अथवा इस से भी अधिक गहराई तक हो सकती है मृदा पौधों की वृद्धि का एक प्राकृतिक माध्यम है तथा मृदा की उत्पादकता ही क्षेत्रीय कृषि विकास का एक आधार होता है।

वनस्पति की दृष्टि से मरुस्थलीय वनस्पति ही यहाँ प्रधानतः होती है जो कम वर्षा और उच्च तापमान में अपना अस्तित्व बनाये रखने में समर्थ है। यहाँ छोटे पौधे, कंटीली झाड़ियों के अतिरिक्त बबूल, खेजड़ी, कीकर, नागफनी आदि पाई जाती है। यहाँ पाई जाने वाली घाँस में सीवन एवं तुरडिगम प्रमुख है। मरुस्थल के जिन भागों में जल उपलब्ध हो रहा है, वहाँ रोपित वनस्पति से पर्यावरण परिवर्त्य में परिवर्तन आ रहा है।

इस क्षेत्र में पाये जाने वाले मुख्य वृक्ष हैं— खेजड़ी, खैर, कीकर, नीम, सीरस, कैर, बोरडी, लेहसुवा आदि। पौधों में मुख्यतः फोग, आक, खींप, कूचा आदि पाये जाते हैं। खेजड़ी, किसान के लिए सबसे उपयोगी वृक्ष होता है। इसकी हरी पत्तियाँ पशुओं के खाने के काम आती हैं खेजड़ी का सूखा चारा भी पशु चाव से खाते हैं। खेजड़ी ही ऐसा वृक्ष है जिसकी छाया में फसल अधिक होती है। खेजड़ी वृक्ष के 'सांगरी' नामक फली लगती है जिसका रायता व सब्जी स्वादिष्ट एवं पौष्टिक मानी जाती है। 'खेजड़ी' नाम अक्षयजड़ी (अक्षय जो नष्ट न हो+जड़ अथवा मूल) से, जिनसे अखयजड़ी भी पुकारा जाता है, निकला प्रतीत होता है। कालान्तर में इसी अखयजड़ी का खेजड़ी नाम हो गया।" इसके अतिरिक्त 'रोहिङ्डा' वृक्ष से स्पष्ट है कि प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ होते हुए भी जिले की अधिकांश जनता कृषि कार्य पर ही निर्भर है। यद्यपि यहाँ खारे पानी की अधिकता, वर्षा पर निर्भरता, सिचाई के साधनों का अभाव आदि अनेक समस्याएँ हैं परंतु फिर भी यहाँ

का किसान कृषि एवं पशुपालन से जुड़ा हुआ है। खेतड़ी, रोहिड़ा जैसे बहुपयोगी वृक्ष यहाँ पाये जाते हैं। मरुस्थलीय जन-जीवन जितना संघर्षमय एवं रंगहीन होता है, उतनी ही संघर्षमय यहाँ की गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। मृदा संरक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं—

वनस्पति आवरण का विकास — मृदा के कटाव को रोकने के लिये भूमि को संगठित रखना आवश्यक है। इसका सबसे सार्थक उपाय वृक्षारोपण है क्योंकि वृक्षों की जड़ें भूमि को संगठित रखती हैं और भूमि का कटाव नहीं होता।

इसके लिये संरक्षी वृक्षारोपण किया जाना आवश्यक है। हरित पेटियो का विकास एक उपयुक्त कदम है।

पट्टीदार कृषि — विधि से फसलों को समोच्च रेखाओं पर पंक्तियों में इस प्रकार बोया जाता है कि प्रवाहित जल का वेग कम हो जाता है तथा प्रवाहित मृदा अपरदन रोधी पट्टीदारों में जमा हो जाती है।

फसल चक्रीकरण — यदि एक प्रकार की फसल निरन्तर उगाई जायगी तो भूमि के अनेक रासायनिक एवं जैविक तत्व कम हो जाते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है। यदि फसलों को बदल-बदल कर बोया जायगा तो भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

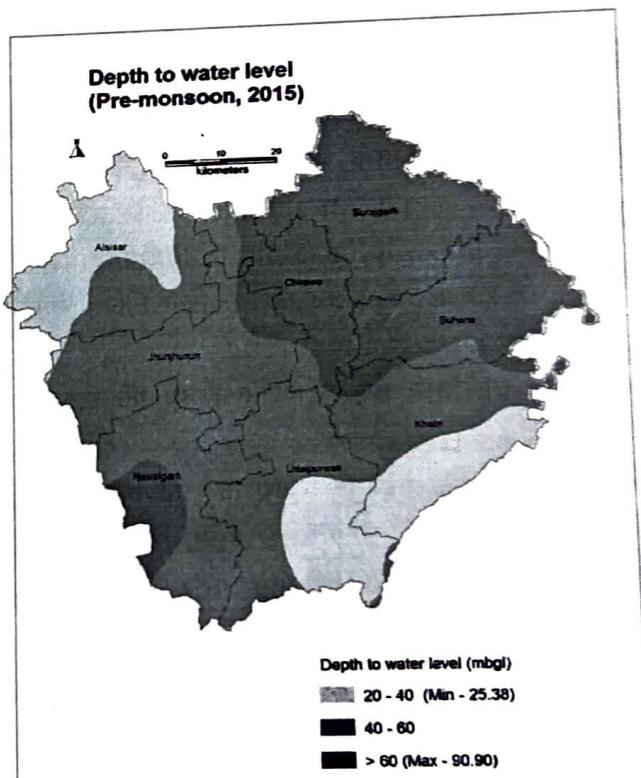
पशुचारण पर नियंत्रण — अनियन्त्रित पशुचारण भूमि कटाव का प्रमुख कारण है इसे नियन्त्रित किया जाना आवश्यक है।

रासायनिक उर्वरकों का सीमित प्रयोग — निरंतर रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति कम होने लगती है। अतः रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का प्रयोग उत्तम रहता है। उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त बाढ़ नियंत्रण, स्थानान्तरण कृषि पर प्रतिबन्ध, अवनालिया नियंत्रण, उचित भूमि उपयोग तथा मृदा प्रबन्धन किया जाना आवश्यक है।

जल संसाधन — जल प्रकृति की अमूल्य देन है और जीव मात्र का अस्तित्व इसी पर टिका है। समय के बदलाव के साथ इस प्राकृतिक संसाधन का अत्यधिक दोहन होना तथा वर्षा की कमी से प्रदेश में जल संकट के हालात सामने उत्थाने रहे हैं। राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। राज्य में सतह जल की कम उपलब्धता एवं कमी के कारण पीने के पानी का लगभग 90 प्रतिशत योजनाएँ एवं 60 प्रतिशत सिंचाई कानून भू-जल पर आधारित है। प्रदेश में हमारे पूर्वज जल का महत्व समझते थे एवं प्रारम्भ से ही सु.ढ जल प्रबन्धन कर रहे थे विगत 40–50 वर्षों से जब से राज्य सरकार ने पेयजल प्रबन्धन की जिम्मेदारी ली एवं यह जल बहुत कम मूल्य पर बिना श्रम किये मिलने लगा, हम इसका महत्व भूल गये एवं वर्षाजल संचयन जोकि हमारे पूर्वज वर्षों से कर रहे थे वह भी बन्द कर दिया। इसके साथ ही भू-जल की अंधाधुन्ध निकार्ता तथा वर्षाजल से भू-जल पुनर्भरण में गिरावट के परिणामस्वरूप प्रदेश की भू-जल स्तर तेजी से गिरने लगा। राज्य के पिछले वर्षों की भू-जल स्थिति इंगित करती है कि हम किस प्रकार गम्भीर भू-जल संकट की तरफ बढ़ रहे हैं।

खेतड़ी क्षेत्र अतिदोहित (डार्क) श्रेणी में वर्गीकृत हमा पुरखों ने सदियों से बूँद-बूँद पानी बचाकर भू-जल जमा

किया था। वर्ष 2001 में भू-जल की मात्रा खेतड़ी क्षेत्र में 3235 मिलियन घनमीटर थी जो अब घटकर 2519 मिलियन घनमीटर रह गई है। भू-जल अतिदोहन के कारण पानी की कमी गम्भीर समस्या बन गई है। खेतड़ी क्षेत्र में वर्ष 1995



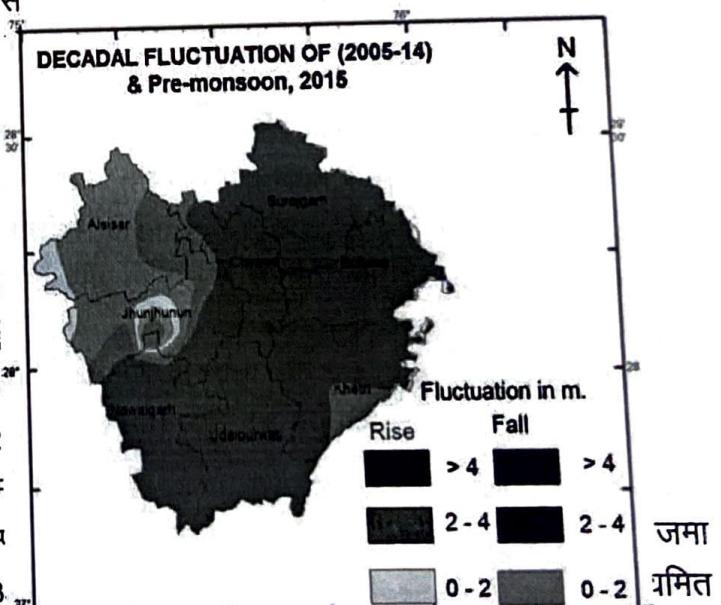
में भूमि में उपलब्ध पानी का प्रतिवर्ष 138 प्रतिशत ही उपयोग करते थे लेकिन अब 246 प्रतिशत दोहन कर रहे हैं अर्थात् कुल वार्षिक पुनर्भरण की तुलना में 48 मिलियन घनमीटर भू-जल अधिक निकाला जा रहा है। 1995 में औसत 43 मीटर गहराई पर पानी उपलब्ध था जो अब 60 मीटर तक हो गया है।

खेतड़ी में भू-जल स्थिति

जिले में भू-जल संसाधनों के विकास एवं प्रबन्धन हेतु भू-जल विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह सर्वविदित तथ्य है कि जल, मानव की महत्वपूर्ण मूलभूत आवश्यकता है। इस क्षेत्र में जहाँ अकाल की स्थिति रहती है, ऐसे में जल की कमी की समस्या के समाधान हेतु काफी हद तक भू-जल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सतत एवं सफल प्रयासों से राज्य के रेगिस्टानी व पहाड़ी जिलों में सिंचाई के लिए भूमिगत जल जुटाने के अतिरिक्त स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता बढ़ी है। भू-जल विभाग मुख्यतः निम्नलिखित गतिविधियां संचालित करता है:

- * सर्वेक्षण एवं अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत नलकूपों व पीजोमीटर की संरचना का निर्माण एवं जल संसाधनों की खोज, मूल्यांकन एवं विकास करना।
- * पेयजल एवं अन्य उद्देश्य हेतु नलकूपों व हैण्डपम्पों का निर्माण करवाना।
- * सरकार की व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं के अन्तर्गत व्यक्तिगत लाभ देने हेतु कुँओं को विस्फोटन द्वारा गहरा कर लाभान्वित करना।

सामान्य तौर पर ऐसा मानते हैं कि भूमि के नीचे पाताल में अथाह भू-जल है। यह भ्रम है। भू-जल का एकमात्र स्रोत वर्षाजल है। जितनी वर्षा होती है उसका 12 से 15 प्रतिशत जल ही धरती में जाता है एवं हमें भू-जल के रूप में उपलब्ध होता है। चट्टानी क्षेत्रों में तो भूमि के नीचे जाने वाले वर्षाजल की मात्रा 12 प्रतिशत से भी कम होती है। खेतड़ी में मुख्य रूप से दो तरह के एकीफर (भू-जल क्षेत्र) हैं— रेतीले क्षेत्र 4520 वर्ग किलोमीटर एवं चट्टानी क्षेत्र 754 वर्ग किलोमीटर। 120 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र खारे पानी का क्षेत्र है। जब क्षेत्र में उपलब्ध ह वाले भू-जल का 100 प्रतिशत से अधिक दोहन किया जाये या वर्षाजल से पुनर्भरित भू-जल के स्वयं द्वारा अनंत वर्षों से संति किये भू-जल धन में से भी भू-जल का दोहन किया तो कं अतिदोहित (डार्क) श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है, अर्थात् इस कं में भू-जल का अतिदोहन हो रहा होता है। खेतड़ी में वर्ष 19 में भू-जल दोहन 99 प्रतिशत था, जो वर्तमान में बढ़कर 2 प्रतिशत हो गया है एवं यह अतिदोहित श्रेणी में वर्गीकृत है। हम पुरखों द्वारा भविष्य की पीढ़ियों हेतु पानी के संरक्षण की परम किये गये थे। वर्ष 2001 में खेतड़ी क्षेत्र में भू-जल भंडार 323 दोहन किया, जिसके कारण वर्तमान में यह भंडार 2519 मिलियन घनमीटर है। यह भंडार अगले कुछ वर्षों में समाप्त प्रायः हो जायेंगे। जनसंख्या वृद्धि और अन्य प्रकार की जल आवश्यकताओं में वृद्धि से खेतड़ी क्षेत्र में अत्यधिक जल संकट की ओर अग्रसर हो रहा है। यहा प्रति व्यक्ति वार्षिक जल उपलब्धता 780 घनमीटर है जबकि न्यूनतम आवश्यकता 1000 घनमीटर आंकी गयी है।



खनिज सम्पदा

जिले के खेतड़ी व सिंधाना के पहाड़ी भाग में लोहा, तांबा, सीसा आदि खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में निकलते हैं। यहाँ की तांबे की खाने सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में प्रसिद्ध है। तारादत्त निर्विरोध के अनुसार— “खेतड़ी ताम्बा परियोजना, सिंधाना के पठारों से रघुनाथगढ़ तक 76 किलोमीटर लम्बाई में फैली हुई विशाल ताम्बा पट्टी पहाड़ के उत्तरी सिरे पर स्थित है। खेतड़ी में मौर्यकाल में भी तांबा निकाला जाता था।” एशिया में सर्वाधिक तांबा, जिले के इस क्षेत्र से ही निकलता है। इसके अतिरिक्त बड़ी मात्रा में लाइमस्टोन पाया जाता है। रॉक-फास्फेट, ग्रेनाइट, चूना पत्थर एवं जिप्सम भी यहाँ है। इसके अतिरिक्त बड़ी मात्रा में लाइमस्टोन पाया जाता है। रॉक-फास्फेट, ग्रेनाइट, चूना पत्थर एवं जिप्सम भी यहाँ है। यहाँ का स्टोन क्रेशर उत्पाद ग्रिट, बजरी, इत्यादि की दिल्ली में चल रहे मैट्रो रेल सेवा निर्माण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यहाँ का स्टोन क्रेशर उत्पाद ग्रिट, बजरी, इत्यादि की दिल्ली में चल रहे मैट्रो रेल सेवा निर्माण में भी काफी उपयोग किया जा रहा है। “स्पष्ट है कि मरुस्थलीय क्षेत्र होते हुए भी यह जिला खनिज पदार्थ की दृष्टि से एक समृद्ध क्षेत्र है। खेतड़ी के ताम्र उद्योग ने तो जिले के साथ-साथ देष की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निर्माई है। यहाँ से प्राप्त स्टोन क्रेशर उत्पाद का उपयोग राज्य में ही नहीं वरन् दिल्ली मैट्रो रेल सेवा आदि बड़े घरों में भी उपयोग में लिया जा रहा है।

जनसांख्यिकी घनत्व

खेतड़ी शहर की जनसंख्या वर्ष 1931 में केवल 7378 व्यक्ति थी जो वर्ष 1971 में बढ़कर 8669 हो गयी। अर्थात् इन 40 वर्षों में जनसंख्या में केवल 1291 व्यक्तियों की वृद्धि हुई जो मात्र 17.5 प्रतिशत थी। खेतड़ी तांबा परियोजना के स्थापना के बाद यहाँ की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। वर्ष 1991 में आबादी 17725 हो गयी जो वर्ष 1971 की आबादी से दोगुने से भी अधिक है। वर्ष 2001 की जनसंख्या के अनुसार खेतड़ी की जनसंख्या 17382 थी जबकि वर्ष 1991 में इसकी जनसंख्या 17725 थी इस प्रकार इसकी जनसंख्या में 1.97 प्रतिशत की कमी हुयी। इसका कारण यह था कि वर्ष 2001 की जनसंख्या में “नानूवाली बावड़ी” खेतड़ी से अलग गांव हो गया, जिसकी जनसंख्या वर्ष 2001 में 7541 थी। इस जनसंख्या का समायोजन करने पर खेतड़ी की जनसंख्या वर्ष 2001 में 24923 होती है। इस प्रकार (1991–2001) दशक में वास्तविक वृद्धि दर 40.6 प्रतिशत होती है।

गोठडा स्थित खेतड़ी तांबा परियोजना क्षेत्र की आबादी वर्ष 1991 में 23465 थी, जो वर्ष 2001 में घटकर 21820 हो गयी। जनसंख्या के छास का मुख्य कारण खेतड़ी परियोजना में तांबा संशोधन संयंत्र में उत्पादन का बन्द होना है जिससे बहुत से लोग बेकार हो गये तथा अन्यत्र चले गये। वर्तमान में तांबा परियोजना में केवल खनिज की छटाई एवं पिसाई कर गुजरात तांबा परियोजना में भेजा जाता है।

सिंधाना क्षेत्र महत्वपूर्ण सड़कों का जंक्शन है। यहाँ पर इस क्षेत्र का मुख्य बस स्टेप्प है तथा यहाँ पर अनेक होटल, रेस्टोरेंट एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ केन्द्रित हैं। इसकी आबादी वर्ष 1991 में 13636 तथा वर्ष 2001 में घटकर 10681 हो गयी। इस कमी का कारण यह था कि इसके उत्तर-पूर्व में स्थित ढाणा गांव वर्ष 2001 की जनगणना में सिंधाना गांव से अलग हो गया जिसकी वर्ष 2001 में जनसंख्या 6142 थी। इस जनसंख्या को समायोजन करने पर सिंधाना की आबादी 16823 होती है और वास्तविक वृद्धि दर 23.4 प्रतिशत होती है।

वर्ष 1991 में नानूवाली बावड़ी एवं ढाणा ग्राम क्रमशः खेतड़ी एवं सिंधाना में सम्मिलित थे अतः इनकी अलग से जनसंख्या आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। जनसंख्या के तुलनात्मक अध्ययन के लिए वर्ष 2001 की इन गांवों की जनसंख्या को सम्मिलित करते हुए वास्तविक वृद्धि दर का आंकलन किया गया है। गांवों को सम्मिलित करते हुए वर्ष 1991 में खेतड़ी-गोठडा-सिंधाना नगरीयकृत क्षेत्र की आबादी 54826 थी जो वर्ष 2001 में 63566 हो गयी। अतः इसकी वास्तविक वृद्धि दर 15.90 प्रतिशत थी। इन गांवों को छोड़कर केवल खेतड़ी-गोठडा-सिंधाना की आबादी वर्ष 2001 में 49883 थी। खेतड़ी तहसील में 103 गांव और 3 शहर हैं।

2011 जनगणना के अनुसार जनसंख्या

परिवारों की संख्या	50,382
जनसंख्या	2,77,946
पुरुष जनसंख्या	1,45,208 (52.24 प्रतिशत)
महिला जनसंख्या	1,32,738 (47.76 प्रतिशत)
बच्चों की जनसंख्या	38,135
क्षेत्रफल	812.54 किमी 2
जनसंख्या घनत्व	किमी 2 342
सेक्स—अनुपात	914
साक्षरता	62.56 प्रतिशत
पुरुष साक्षरता	73.37 प्रतिशत
महिला साक्षरता	50.74 प्रतिशत
अनुसूचित जनजाति (एसटी)	2.68 प्रतिशत
अनुसूचित जाति	13.57 प्रतिशत

स्रोत : 2011 के जनगणना के अनुसार

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, खेतड़ी तहसील में 50,382 परिवार हैं, जिनकी आबादी 2,77,946 है, जिनमें 1,45,208 पुरुष और 1,32,738 महिलाएं हैं। 0–6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 38,135 है जो कुल जनसंख्या का 13.72 प्रतिशत है। खेतड़ी तहसील का लिंग—अनुपात 928 की तुलना में लगभग 914 है जो राजस्थान राज्य का औसत है। खेतड़ी तहसील की साक्षरता दर 62.56 प्रतिशत है, जिसमें से 73.37 प्रतिशत पुरुष साक्षर हैं और 50.74 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। खेतड़ी का कुल क्षेत्रफल 812.54 वर्ग किमी है, जिसकी जनसंख्या घनत्व 342 प्रति वर्ग किमी है। कुल जनसंख्या में से, 83.54 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्र में और 16.46 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में रहती है। खेतड़ी तहसील में कुल जनसंख्या का 13.57 प्रतिशत अनुसूचित जाति और 2.68 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति हैं।

संदर्भ

1. खेतड़ी में रजवाड़ो के समय से ही चालु थी जल स्वावलम्बन योजना, राज समाचार डॉट कॉम, 6 दिसम्बर, 2017
2. मौसम विज्ञान केन्द्र, पिलानी, 2016–16
3. आर्थिक समीक्षा 2016–17, राजस्थान सरकार, जयपुर
4. भू–जल विभाग राजस्थान सरकार, 2017 रिपोर्ट के आधार पर
5. तारादत्त निर्विरोध, गाथा शेखावाटी की, रों वाली माटी की, कविता प्रकाशन, झुन्झुनूं, 1983
6. सक्सेना, एच.एम., राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007
7. जोशी, कमल नारायण, ‘राजस्थान की जल नीति’ विकास अध्ययन संस्थान जयपुर, 2003

